अध्याय 14.
जैनधर्म की मौलिक विशेषताएँ

1. **जिन एवं जैन किसे कहते हैं ?**
   जयति इति जिनः। अपनी इन्द्रियों, कषायों और कर्मों को जीतने वाले जिन कहलाते हैं तथा ''जिनस्य उपासकः जैनः'' अर्थात् जिनेन्द्र भगवान् के उपासक को जैन कहते हैं।
2. **जैनधर्म किसे कहते हैं ?**
   जिन के द्वारा कहा गया धर्म जैनधर्म है।
3. **धर्म किसे कहते हैं ?**
   जिसके द्वारा यह संसारी आत्मा-परमात्मा बन जाता है, वह धर्म है। अर्थात् सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र को धर्म कहा है, क्योंकि रत्नत्रय के माध्यम से ही यह आत्मा-परमात्मा बनती है।
4. **जैनधर्म के पर्यायवाची नाम कौन-कौन से हैं ?**
   जैनधर्म के पर्यायवाची नाम निम्नलिखित हैं-
   1. **निर्ग्रन्थ धर्म** -समस्त परिग्रह से रहित साधु को निर्ग्रन्थ कहते हैं और उनके धर्म को निर्ग्रन्थ धर्म कहते हैं।
   2. **श्रमण धर्म** - तपश्चरण करके जो अपनी आत्मा को श्रम व परिश्रम पहुँचाते हैं, वे श्रमण हैं और उनके द्वारा धारण किया जाने वाला धर्म श्रमण धर्म है।
   3. **आर्हत् धर्म** - अरिहन्त परमेष्ठी द्वारा प्रतिपादित धर्म आर्हत् धर्म है।
   4. **सनातन धर्म** - अनादिकाल से चले आ रहे धर्म को सनातन धर्म कहते हैं।
   5. **जिन धर्म** - जिनेन्द्र कथित धर्म को जिनधर्म कहते हैं।
5. **जैनधर्म की मौलिक विशेषताएँ कौन-कौन सी हैं ?**
   जैनधर्म की मौलिक विशेषताएँ निम्नलिखित हैं -
   1. **अनेकान्त**-अनेक+अन्त=अनेकान्त। अनेक का अर्थ है-एक से अधिक, अन्त का अर्थ है गुण या धर्म। वस्तु में परस्पर विरोधी अनेक गुणों या धर्मों के विद्यमान रहने को अनेकान्त कहते हैं।
   2. **स्याद्वाद**- अनेकान्त धर्म का कथन करने वाली भाषा पद्धति को स्याद्वाद कहते हैं। स्यात् का अर्थ है कथंचित् किसी अपेक्षा से एवं वाद का अर्थ है कथन करना। जैसे रामचन्द्रजी राजा दशरथ की अपेक्षा से पुत्र हैं एवं रामचन्द्रजी लव-कुश की अपेक्षा से पिता हैं।
   3. **अहिंसा** -जैनधर्म में अहिंसा प्रधान है। मन, वचन और काय से किसी भी प्राणी को कष्ट नहीं पहुँचाना एवं अन्तरङ्ग में राग-द्वेष परिणाम नहीं करना अहिंसा है।
   4. **अपरिग्रहवाद**- समस्त प्रकार की मूर्च्छा /आसक्ति का त्याग करना एवं मूर्च्छा का कारण पर पदार्थों का त्याग करना अपरिग्रहवाद है। अपरिग्रहवाद का जीवन्त उदाहरण दिगम्बर साधु हैं।

अपरिग्रहवाद के सिद्धान्त को विश्व मान ले तो विश्व में अपने आप समाजवाद आ जाएगा।

5. **प्राणी स्वातंत्र्य** -संसार का प्रत्येक प्राणी स्वतंत्र है। जैसे-प्रत्येक नागरिक राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री बन सकता है। उसी प्रकार प्रत्येक आत्मा-परमात्मा बन सकती है, किन्तु परमात्मा बनने के लिए कर्मों का क्षय करना पड़ेगा और कर्मों का क्षय, बिना दिगम्बर मुनि बने नहीं हो सकता है।
6. **सृष्टि शाश्वत है** - इस सृष्टि को न किसी ने बनाया है, न इसको कोई नाश कर सकता है, न कोई इसकी रक्षा करता है। प्रत्येक जीव को अपने किए हुए कर्मों के अनुसार फल मिलता है। उसके लिए न्यायाधीश की आवश्यकता नहीं है। जैसे-चाय पीने से नशा होता है और दूध पीने से ताकत आती है। चाय या दूध पीने के बाद उसके फल देने के लिए किसी दूसरे निर्णायक की आवश्यकता नहीं है।
7. **अवतारवाद नहीं**- संसार से मुक्त होने के बाद परमात्मा पुनः संसार में नहीं आता है। जैसे-दूध से घी बन जाने पर पुनः वह घी दूध के रूप में परिवर्तित नहीं हो सकता है। उसी प्रकार परमात्मा (भगवान्) पृथ्वी पर अवतार नहीं लेते हैं।
8. **पुनर्जन्म** - जैनधर्म पुनर्जन्म को मानता है। प्राणी मरने के बाद पुनः जन्म लेता है। जन्म लेने के बाद पुनः मरण भी हो सकता है, मरण न हो तो निर्वाण भी प्राप्त कर सकता है, किन्तु निर्वाण के बाद पुनः उसका जन्म नहीं होता है।

अभ्यास

सही या गलत बताइए-

1. दूसरों को जीतने वाले जिन कहलाते हैं।
2. रत्नत्रय को धर्म कहा है।
3. आप चाचा, मामा या बुआ, मौसी हो सकते हैं/सकती हैं।
4. प्रत्येक परमात्मा आत्मा बन सकता है।
5. आप प्रधानमंत्री बन सकते हैं।
6. घी, दूध नहीं बन सकता है।

अन्यत्र खोजिए -

1. हिन्दूधर्म एवं जैनधर्म की मान्यताओं में मूलभूत अन्तर कौन-कौन से हैं ?
2. जैनधर्म का प्रथम सोपान क्या है ?
3. जैनधर्म का अन्तिम लक्ष्य क्या है ?